शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

रूस–यूक्रेन युद्ध पर भारत का दृष्टिकोण

प्राप्तिः 20.12.2022
स्वीकृतः 26.12.2022

103

अंजू चौधरी
पी०एच०डी०
ईमेलः *sandeepanutomar@gmail.com*

सारांश

शांति एक आधारभूत आवश्यकता है, जो मानव जाति को विकास के पथ पर अग्रसर करती है। शांति एक प्राकृतिक, सामाजिक स्थिति है जबकि युद्ध अप्राकृतिक है। युद्ध से आर्थिक, सामाजिक तथा मानवीय क्षति होती है, किन्तु फिर भी मानव जाति का इतिहास युद्धों का इतिहास रहा है। वास्तव में युद्ध के तीन मुख्य कारण है–

- *मानवीय आक्रमकता हेतु*
- *आर्थिक लाभ हेतु*
- *राज्य के भौगोलिक तथा विचारधारा के विस्तार हेतु*

वर्तमान समय में पूरा विश्व एक भयंकर मानव त्रासदी को देख रहा है, जिसका कारण रूस तथा यूक्रेन के मध्य का युद्ध है। इस युद्ध ने जहाँ पूरे विश्व को दो खेमों में बांट दिया है, वहीं संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। किंतु इस युद्ध के प्रति भारत का दृष्टीकोण बहुत ही संयमित तथा तटस्थ रहा है। भारत युद्ध का प्रबल विरोधी है, किन्तु अपनी गुट निरपेक्षता की नीति के कारण उसने अभी तक किसी भी पक्ष का समर्थन अथवा विरोध नहीं किया है, बल्कि विश्व राजनीति में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा रहा है।

मुख्य बिन्दु

युद्ध, शांति, साम्यवाद, पूंजीवाद, नाटो, ऑपरेशन गंगा।

वर्तमान समय में विश्व राजनीति में हलचल मची हुई है, जिसका प्रमुख कारण है रूस तथा यूक्रेन के मध्य युद्ध। रूस ने 25 फरवरी 2022 को यूक्रेन पर आक्रमण किया। इस युद्ध के कारणों को समझने के लिए हमें रूस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना होगा। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 7 नवम्बर 1917 को लेनिन के नेतृव में रूस में बोलशेविक क्रांति हो गई। जार निकोलस–II का शासन समाप्त हो गया तथा बोलशेविक सरकार की स्थापना हुई। जुलाई 1918 में सोवियत रूस के संविधान का प्रारूप बना जिसके अनुसार रूस में सोवियत गणतंत्र की स्थापना की घोषणा की गई। 18 वृष अथवा उससे अधिक के व्यक्तियों को मताधिकार दिया गया, किन्तु पादरी सामंत, जार व उसके परिवारीजनों को मताधिकार से वंचित कर दिया गया। 1921 में लेनिन ने नई आर्थिक नीति शुरू की। यह वस्तुतः पूंजीवाद तथा साम्यवाद के मध्य एक समझौता था, जिससे रूस की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया

जा सके। 1924 में लेनिन की मृत्यु हो गई। लेनिन की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार का प्रश्न उपस्थित हुआ। ट्रॉटस्की अथवा स्टालिन? ट्रॉटस्की लेनिन का वफादार था। वह युद्धमंत्री तथा विदेश मंत्री के पद पर कार्य कर चुका था। वह बोलशेविक विचारों का विश्व स्तर पर प्रचार करना चाहता था।

किन्तु स्टालिन ट्रॉटस्की के विचारों से असहमत था। वह विश्व आन्दोलन के स्थान पर एक देश में समाजवाद की स्थापना के पक्ष में था। साम्यवादी दल का मंत्री होने के नाते स्टालिन का दल के संगठन पर पूर्ण नियंत्रण था।

उसने 1927 में ट्रॉटस्की को दल से निष्कासित कर दिया। इसके बाद उसे रूस से भी निष्कासित कर दिया तथा 1940 में मेक्सिकों में उसकी हत्या कर दी गई। इस तरह स्टालिन रूस का नया तानाशाह बना। स्टालिन ने रूस को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया तथा 1925 में पंचवर्षीय योजना की शुरूआत की। कृषि तथा कारखानों का राष्ट्रीयकरण किया। चर्च तथा धर्म पर कड़े प्रतिबंध लगाये। 1934 में रूस को League of Nations की सदस्यता मिली। 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया, जिसकी परिणति जापान पर परमाणु हमले के रूप में हुई। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व दो गुटों में बंट गया–साम्यवाद तथा पूंजीवाद। साम्यवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व भूतपूर्व सोवियत संघ ने किया जबकि पूंजीवादी विचारधारा को अमेरिका ने पोशित किया। शीतयुद्ध ने 1946 से 1989 तक विभिन्न चरणों से गुजरते हुए अलग–अलग रूप में विश्व राजनीति को प्रभावित किया। मिखाइल गोर्बाच्योव द्वारा दिये गये परैस्ट्राइका तथा ग्लासनॉस्ट के सिद्धान्तों से सोवियत संघ के विघटन के साथ ही शीतयुद्ध की भी समाप्ति हो गई। किन्तु विचारधाराओं की असमानता विश्व राजनीति को लगातार प्रभावित करती रही है। वर्तमान रूस समाजवाद से दूर है। वहाँ राष्ट्रवाद को उभारा जा रहा है। पुतिन का मजबूत होना तथा नाटो के विस्तार का प्रयास आपस में जुड़े है। 1990 से लगातार प्रयास हो रहे है कि विश्व को एक ध्रुवीय बनाये रखा जाए। किन्तु विश्व की नवीन उभरती हुई अर्थ व्यवस्थाओं के कारण यह हो नहीं पा रहा है। वर्तमान समय में रूस तथा यूक्रेन के मध्य जारी युद्ध किसी दोष के पराक्रम का युद्ध नहीं है। बल्कि यह विश्व के ताकतवर देशो के भयभीत होने का युद्ध है।

यह वो डर है जो कई बार संदेह के कारण उत्पन्न होता है। रूस के प्रति विश्वभर के देशों में एक संशय बना रहता है तथा रूस भी अतीत के शत्रुओं को संदेह की दृष्टि से देखता है। ऐसी स्थिति में युद्ध अपरिहार्य हो जाता है।

यूक्रेन के प्रति रूस का विशेष लगाव है। 1922 में सोवियत संघ ने यूक्रेन को यूएसएसआर यूक्रेन नाम देकर सोवियत संघ का सदस्य बनाया। 1991 में जब सोवियत संघ का विघटन हुआ तब यूक्रेन अपनी आजादी की घोषणा करने वाला पहला देश बना था। उसके बाद तो सोवियत संघ ताश के पत्तों की तरह बिखर गया। रूस के दिमाग में आज भी यह डर बैठा हुआ है कि अगर यूक्रेन हमारे साथ नहीं रहा तो अमेरिका तथा यूरोप हमारे साथ धोखा कर सकते है। दूसरी तरफ यूरोप तथा अमेरिका को लगता है कि अगर यूक्रेन हमारे साथ नहीं रहा तो रूस का प्रभाव विश्व में बढ़ सकता है। रूस यूक्रेन को एक बफर स्टेट के रूप में चाहता है। जबकि अमेरिका यूक्रेन को नाटो की सदस्यता देना चाहता है। इसीलिए कहा जा रहा है कि यूक्रेन एक ग्रेट गेम में फंसा हुआ है, जिसे निकलने का मार्ग नहीं सूझ रहा।

रूस–यूक्रेन युद्ध चार माह से जारी है। इतने दिनों में विश्व में क्या परिवर्तन हुआ? इसे कैसे देखा जाए? आगे और क्या हो सकता है? इसके आकलन भी अच्छे संकेत नहीं दे रहे हैं। यूक्रेन के राष्ट्रपति और उनके सलाहकार अपने अलग–अलग वक्तव्यों में यह कहते दिखाई दे रहे है कि लड़ाई

अब फियरफुल क्लाइमेक्स (डरावने अंत) में प्रवेश कर गई है। प्रश्न यह है कि डरावना अंत किसके संदर्भ में है? रूस अथवा यूक्रेन या फिर पूरे विश्व के संदर्भ में? सामान्यतः तो यह विषय रूस तथा यूक्रेन तक ही सीमित है, परन्तु सही अर्थों में इसकी परिधियाँ बहुत व्यापक है। एक प्रश्न यह भी है कि यदि यूक्रेन हारता है तो यह पराजय केवल यूक्रेन की होगी अथवा यूरोप और अमेरिका की भी? यह बात जीत के विषय में भी पूछी जा सकती है कि विजय केवल रूस की होगी या फिर चीन की भी? यदि चीन की भी हुई तो फिर इसका इंडो–पेसिफिक की भू–राजनीति पर क्या असर पड़ेगा?

दरअसल इस नई विश्व व्यवस्था के प्रतिनिधि देशों ने यह सवाल कभी नहीं उठाया कि शीत युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद भी 'नाटो' क्यों बना हुआ है? यह सवाल भी नहीं उठाया कि अमेरिका में हुई 9/11 की आतंकी घटना के बाद अफगानिस्तान पर हमला हुआ, परन्तु पाकिस्तान पर क्यों नहीं? एशिया से लेकर अफ्रीका तथा लातिन अमेरिका के भू–राजनीतिक खण्डों पर ऐसी बहुत सी घटनाओं के उदाहरण मिलेंगे, जिनमें विध्वंस के विशेष अभिप्राय शामिल होंगे। लेकिन विश्व व्यवस्था के नायकों ने इनकी परवाह नहीं की, जिसका परिणाम नए समूहों के उदय के रूप में देखने को मिला। यह भी कहा जा सकता है कि दुनिया फिर से एक ध्रुवीयता से बहुध्रुवीयता की ओर बढ़ी। लेकिन बड़ी शक्तियों को यह स्वीकार्य नहीं है कि बहुध्रुवीयता अपने वास्तविक रूप में सामने आए। इन्हें दो प्रकार से खत्म किया जा सकता था। इनमें प्रवेश लेकर अथवा ऐसी परिस्थितियों को जन्म देकर जिनमें ये नये खतरे को महसूस करें और फिर से वाशिंगटन या मास्को की ओर देखने लगे। यूक्रेन युद्ध इसी रणनीति का परिणाम है। दरअसल यूक्रेन युद्ध एक तरह का शक्ति परीक्षण है। इसमें जहाँ रूस एक शक्ति बनने का प्रयास कर रहा है, वहीं अमेरिका वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी अभिलाषाओं को जिंदा रखने की कोशिश में है। यह नया नहीं है। गौर से देखे तो दुनिया लगभग एक दशक से भी अधिक समय से शक्ति संतुलन के लिए एक छद्म युद्ध के दौर से गुजर रही थी। इसमें एक तरफ था अमेरिका और दूसरी तरफ चीन। इसने रूस को लगातार इस बात के लिए जागरूक किया कि वैश्विक शक्ति समीकरण में वह कहीं गायब होता जा रहा है। इसलिए पुतिन ने सीरिया में अमेरिका के खिलाफ मोर्चा लिया तथा विजयी रहे। इसके पश्चात् यूक्रेन से क्रीमिया लेकर न केवल सेवास्तेपोल को सुरक्षित किया बल्कि काला सागर में शक्ति संतुलन को रूस के पक्ष में किया, जिसकी विशेष रणनीतिक उपादेयता है।

इसके बाद नाटो की सदस्यता को लेकर हुए विवाद के कारण रूस ने यूक्रेन पर हमला किया। यद्यपि पुतिन की महत्वकांक्षा यूक्रेन को रूस में मिलाने की नहीं है, बल्कि वह यूक्रेन में एक ऐसी सरकार बनाना चाहते है जो रूस के लिए सहयोगी हो। चूंकि पुतिन की इस मुहिम के विरूद्ध अमेरिका और उसके अहम सहयोगी रूस विरोधी खेमे के रूप में एकजुट हो गये। इसलिए बीजिंग–मास्को की बांडिंग और मजबूत हो गई। इससे भले ही तात्कालिक परिणाम केवल यूक्रेन की जय या पराजय तक सीमित दिख रहे हो, लेकिन वास्तव में चीन व रूस की बांडिंग विश्व के लिए कहीं अधिक खतरनाक सिद्ध हो सकती है।

रूस–यूक्रेन युद्ध के प्रति भारत का दृष्टिकोण बहुत ही संतुलित रहा है, संयुक्त राष्ट्र में भारत ने पश्चिमी देशों के बढ़ते दबाव के बावजूद रूस के हमले का कोई जिक्र नहीं किया है। भारत ने युद्धग्रस्त यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए ऑपरेशन गंगा चलाया, जिसमें रूस तथा यूक्रेन दोनों देशों की सेनाओं ने सहयोग किया। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की मजबूत होती छवि का प्रमाण है। भारत अमेरिका के दबाव में न आते हुए यूक्रेन में रूस के हमले की निंदा करने वाले सभी प्रस्तावों को लेकर हुई वोटिंग के दौरान भी अनुपस्थित ही रहा है। भारत का स्पष्ट रूख है कि वह

युद्ध के तो विरूद्ध है किंतु किसी एक पक्ष के प्रति वह अपना झुकाव प्रदर्शित नहीं करेगा। विदेश मंत्री एस0 जयशंकर का मानना है कि आज भारत की विदेश नीति किसी भी गुट के दबाव में संचालित नहीं होती बल्कि यह पूर्णतः हमारे राष्ट्रीय हितों पर आधारित है। एक तरफ भारत अमेरिका के साथ विभिन्न संगठनों का सदस्य है, जहाँ दोनो देश साझा हितों तथा विकास के मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं, दूसरी तरफ भारत रूस से रियायती दरों पर तेल भी खरीद रहा है, जो कि भारत की स्वतंत्र व मजबूत विदेश नीति का ही परिचायक है। भारत अपनी निष्ठा एवं अथक प्रयासों से विश्व मंच पर अपने अस्तित्व को प्रभावशाली बना रहा है।

संदर्भ

1. भारत की बढ़ती वैश्विक ख्याति www.hindilibraryindia.com.
2. महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत www.prabhatkhabar.com.
3. विदेशों में भारत का बढ़ता प्रभाव https://www.meritnation.com.
4. विदेश नीति और सुरक्षा, Center for the advanced study of India. http://casi./sas.upenn.edu.
5. Moss, Watter G. (2004). A history of Russia: Vol.2. Anthem Press.
6. Ziegler, Charles E. (2009). The History of Russia. ABC-CLIO.
7. आधुनिक विश्व का इतिहास 1500 से 2000 तक जैन एवं माथुर. बुकमैन.
8. बिहारी, प्रो0 रितम्भरी देवी. विश्व का इतिहास. हिन्दी ग्रन्थ अकादमीः पटना.